रात्री क्लास ओम शान्ती 12-1-66

बाप को बुलाते हैं हमको पतित सें पावन बनाओ साथ में लें जाओ। गोया मुक्ति के लिये बुलाते हैं कि आये कर हम आत्माओं को यहां सें ले जाओ। यह रावण राज्य है। परन्तु समझते नही। शरीर तो सबका यहां खत्म होवेगा नां। इस लिये ही कहा जाता हैं भगपान कालों का काल हैं। सब को लें जाते है। बुलाते है बाबा इस छी-छी दुनियां सें हम को लें जाओ। तुम सुख धाम शान्ती धाम जाने लिये पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सब का पुरुषार्थ हैं झुठा। तुम्हारा हैं सही। तुमको खुशी होती है हमघर जावेंगें। विचार करो बेहद का बाप क्या कर रहें हैं। खुद कहते है कि कितने बेसमझ बन गये हैं। रावण नें तुम आतमाओं को बेसमझ बनाये दिया हैं। आत्मा कि बिन्दी हैं। इसमें 84 जन्मों का पाँठ हमेशा के लिये भरा हुआ हैं। कितने डीप जाते हो। आत्मा में कल्प-2 कल्पान्तर के लिये पाँट नूधा हुआ है। यह पाँट को बदल नही सकते। कोई को टोड नही सकते। बच्चे जानते हैं हम ईश्वरिय बच्चे हैं हमको परमपिता परमात्मा पढाते है। बेहद का बाप हैवनली गौड फादर स्वर्ग स्थापन करने वाला हैं। अब समझते आये हो। बाप आये ही हैं वापिस ले जाने के लिये। बच्चे सब बुलाते हैं ओ पतित पावन ओ लिबरेटर आओ। जानते हो बाबा पण्डा भी हैं नां। पाण्डव समप्रदाय नाम हैं नां। बच्चों नें समझा है पाण्डव सेना रूहानी सेना हैं। रूहानी बाप दवारा बच्चों को रूहानी ज्ञान मिलता हैं। शास्त्रों का ज्ञान भक्ति मार्ग का है। बनारस में अनेक प्रकार के टाईटल मिलते हैं। डाक्टर आफ फिलासाफी आद। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता हैं। क्यु कि आत्माओको इन्जेक्शन ज्ञान का लगाते हैं। ज्ञान अंजन सतगुर दिया अज्ञान अंधेरा विनाश। आत्मा ही पतित तमोप्रधान बनती है। जैसे सोना वैसे ही जेवर भी बनते हैं। तुम सच्चा सोना थी। फिर अलाय पड गया। सो कलायें कम हो गयी। अब कोई भी कलाएं नही रही है फिर सबकी चढती कला होती हैं। वो है ही भक्ति मार्ग। कोई सदगती देने वाला गुरु भक्ति मार्ग में होता नही हैं। बीच में कोई वापिस जाये नही सकते। धर्म स्थापक सब तमोप्रधान हैं। फिर सब अपने-2 सेक्शन में चले जावेंगें। बहुत कहते हैं हमको मन की शान्ती चाहिये। शान्ती तो होती हैं मुक्ति धाम में। समझते है सुख कांग विष्ठा समान हैं। इस लिये सुख नही चाहिये। सतयुग कें सुख का उनको पता ही नही हैं। शास्त्रों में दण्ड कथायें लिख दीहैं। कंस जरास धी शिशुपाल सतयुग में थे। परन्तु यह सब ही अब के ही हैं। भागवत संगम का हैं। बाबा अब बहुत समझदार बनाते हैं। पत्थर सें पारस बुधी बनाते हैं। अब तुम राजयोग सीख रहे हो। सन्यासियों का हठ योग हैं। योगी पवित्र रहते हैं। तुम्हारी हैं ही माया सेंलडाई। मसया जीते जगत जीत बनना है। मायर सें हारे हार है। मेहनत सारी याद मे हैं। बाप कहते हैं मै तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। तुम मुझे याद नही कर सकते हो। याद ही है मुख्य। उठते बैठते याद में ही रहना हैं। सवेर का समय बहुत ही अच्छा हैं। 2। जन्मों के लिये ऐवर हैल्दी वैल्दी बनतेहो। तो कुछ तो मेहनत भी करनी पडे नां? यह है ही सहज राजयोग और सहज ज्ञान। अब तुम्हारी बुधी सारी खुल गयी है। अब तुम ज्ञान जोतेश्वरी हो। फिर बनोगें रीज राजेश्वर। तो पुरुषार्थ करके अपना ऊंच पद लेना चाहिये। ऐसे नही कि चलो प्रजा ही सही। बाप कहेंगें कि कमजोर है। अब फेल हुये तोकल्प-2होंगें ओम रात्री क्लास 13-1-66:- बच्चों नें अनुभव सुनाया। अब बच्चों नें ज्ञान और भक्ति का फर्क समझा। सन्सायी लोग भी कहते है ज्ञान भक्ति और वैराग। वो समझते हैं कि हम वैरागी है। घर बार छोडा हैं। अब तुम बच्चे समझते हो कि वो तो हठ योग का वैराग है। अनेक प्रकार के हठ क्रिया क्रम सिखलाते है। एक जगह पर सब प्रकार के हठ योग की क्रियायें सिखाई जाती है। दिखाते हैं। सन्सीसियों का है निवृती मार्ग। अब वो लोग शास्त्रों को ज्ञान समझते हैं। कहते भी है कि ज्ञान परमपिता परमात्मा पढाते है। परन्तु वो ज्ञान कब दिया है यह भी कोई को पता ही नही हैं। जरूर उनको आकर शरीर में बैठ कर ज्ञान देना पडे। बच्चे जानते है कि ऊंच तें ऊंच भगवान है। वो आकर जरूर ऊंच ही बनावेंगें। भगवान और भगवती बनाते हैं। लक्ष्मी को भी भगवान भगवती कहा जाता है। भगवान तो निराकार बाप हैं। फिर बच्चों को ज्ञान वोही देते है जिससे फिर बच्चे विश्व पर राज्य करते हैं। तो इन्होनें भी विश्व पर राज्य किया हैं। तो क्या विश्व के बाप नें एक को ही बैठ कर ज्ञान दिया? उनकी तो राजधानी थी नां। मनुष्यों की समझ में ही नही आता है। नर नारायण कौन हैं।

12-11-66

4 भुजायें क्यूं दी हैं?4 भुजाओं का क्या अर्थ होगा?इनसे वो क्या करते होगें?तो इनकी स्त्री को भी 4भुजायें होगी।वशावली को भी 4 भुजायें होगी।वो नही समझते हैं तुम जानते हो कि सतयुग में यह राज्य किया कौन।यह [illegible]वल सिरताज धारी हैं तो राजाई इन्होंनेकी होगी।बुलाते भी है तो जरूर कब सुख दिया होगा बाप समझाते हैं वो हैं सन्यासियों का ज्ञान।अब बाप समझाते हैं कि खीर सागर में कोई खडे हो नही सकते लेट नही सकते।वो लोग हठयोग सिखलाते हैं क्रियायायें करते हैं बाप कहते हैं कि अच्छा इतना किया मगर इससे हुआ क्या।कोई अमर बने क्या?समुंद्र को तैर कर पार किया अच्छा 5-10 लाख ईनाम मिला मगर हुआ क्या?ईनाम मिला बस नां।अब बच्चे जानते हैं कि हम पुरानी दुनिया से निकल नई दुनिया में जावेंगें।हमको कोई नदी आद पार नही करनी हैं। कहते है नां नैया पार करो वो तो कोई बात है नही। नां कोई स्टीमर हैं।एक चन्द्र कान्त वेदान्त हैं बाबा का गुजराती में पढा हुआ है।उसमें स्टीमर की कथा लिखी हुई हैं।यहां स्टीमर भी तो हैं नही।कहते हैं कि खेवैया मेरी नैया पार करो।हो तो मनुष्य नां। पावन बनने के लिये बाप से वर्सा लेकेन के लिये पढाई कर रहे हो।नैया आद कोई हैं नही।तुम बच्चे जानते हो पढाई ऊंच तें ऊंच है ही राजयोग की।बाप कहते हैं कि तुमको सतोप्रधान बनना हैं।कहते भी है नां कि आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल।अब समझते तो हैं नही किस बाप से कौन बहुकाल अलग रहा हैं।सो तो तुम आद ी सनातन देवी देवता धर्म वाले ही जास्ती समय अलग रहे हो।पुरुषोत्तम युग कहा जाता है संगम युग को।कुंभ भी कहा जाता है संगम को संगम पर हीमेला लगता हैं नां।यह संगम का मेला हैं नां जोकि तुम आत्मायें बाप परमात्मा से मिलने आई हो।तुमने ही 84 जन्मों का चक्र पूराकिया हैं अब फिर वापिस जाना हैं।पावन जरूर बनना हैं।कहते भी हैं पतित पावन।वो तो फिर भगवान ही हैं।तो ही स्वर्ग की स्थापना करते है।बाप कहते हैं कि तुम ही मालिक थे नां।तुमने ही वर्सा पाया था। फिर अब तुम ही मालिक बन रहे हो।स्वर्ग में तो देवी देवता ही होते है।बाकी सब आत्मायें परमधाम में रहती हैं। तुम बच्चों को सृष्टी चक्र के आद, मध्य अन्त का ज्ञान हैं।द्वापर से रावण राज्य शुरु होता हैं। भक्ति मार्ग की आद होती हैं।आधा कल्प हैंही दिन ।भक्ति मार्ग में भी विकारो का सन्यास तो किया जाता है नां। मीरा ने विकारो कासन्यास किया और बार बार छेट गया।उसने बोला कि हम तो पवित्र रहेंगें।कृष्ण पास ज जाऊंगी।राजा को भी छोड दिया।गीत आद तो बाद में बैठ कर बनाते है।अब तुम जानते हो कि कृष्ण पुरी स्थापन हो रहीवहै।पावन बन रहे हो फिर राज्य करोगें।अब उन लोगों की महिमा की जाती है वैसे ही अब ल॰ न॰ है तो नही बस महिमा की जाती है।वो तो कुछ नही जानते हैं कि बाप कौन हैं स्वर्ग क्या हैं। तो कितनी पत्थर बुद्धी बन गयी हैं।सब गाते भी झूठ बोलते भी झूठ ही है।कृष्ण को गांव का भी छोरा कहते है नां।अब तुम जानते हो कि गांव का छोरा कौन हैं।बाप ही बैठ समझाते हैं कि तुम बच्चों ने 84 जन्म पूरे किये है।अब पावन बन रहे हो।बच्चे राजयोग सीख रहे है।फिर पावन दुनिया में राज्य करेंगें बच्चे समझते हैं ना?तुम्हारी ही 84 जन्मों की कहानी है।पहले सतयुग में थे फिर त्रेता में आये।फिर राम राज्य गुम हो गया फिर रावण राज्य में आये।हम फिर बडे पुजारी बन गये।कहानी कितनी सहज है।जैसे कि एक कहानी है।सत्य नारायण की कथा हैं।वो तो रोचक कहानियां बैठ सुनाते हैं।सब मध जेल में पडे हुये हैं।तुम बच्चों को तो अब गीध महल में जाना है कितना नशा चाहिये।अब तुम बच्चे समझते हो कि सन्यासी आद क्या समझाते हैं कहो यह क्या बकते हो?पहले-2 भक्ति करने वालों का तो बहुत नाम हैं। उनकी भी माला बनी हुई है।तुम्हारी अलग है भक्ति करने वालों की अलग है।पहले -2 तुमने शिव की ही भक्ति की थी।आधा कल्प में 63 जन्मों में धक्के ही खाये है।वही फिर आधा कल्प में 2।जन्म होते है यहां 63 हो जाते हैं।तो अब तुमको पूरा-2 पुरुषार्थ राजाई पाने का करना चाहिये।अब तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुये अब तुमको बाप के पास जाना हैं।बच्चों को अब शान्ती धाम में ही पूर्ण शान्ती मिलेगी। अच्छा जी गुडनाईट